ध्येय IAS®

most trusted since 2003

दिसम्बर | 2023

वर्ष का लेखा-जोखा

परीक्षोपयोगी सारगर्भित नोट्स

सरल व बोधगम्य भाषाशैली का उपयोग

डायग्राम, टेबल व चित्रों का तार्किक उपयोग

ध्येय IAS
योजना ज़िस्ट

अंतरिक्ष में भारत की ऊंची उड़ान

परिचय

- यह वर्ष भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान एवं अन्वेषण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने सेंटर, इनर्शियल नेविगेशन गाइडेंस और कन्ट्रोल प्रणालियों की आधुनिकतम टेक्नोलॉजी विकसित कर ली है।
- मून ऑर्बिटर मिशन, आदित्य एल-1 और चन्द्रयान-3 जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण मिशनों की सफलता का श्रेय इस अनूठी क्षमता को भी दिया जा सकता है।

विकास का इतिहास:

- 1960 के दशक के मध्य में, जब विश्वभर की अंतरिक्ष एजेंसियां अंतरिक्ष दौड़ में लगी थीं, भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोगों पर केंद्रित था।
- तभी से कार्यक्रम का विस्तार सामाजिक लाभ प्राप्त करने और आत्मनिर्भर बनने के उद्देश्य से हो रहा है।

आत्मनिर्भरता:

- भारतीय वैज्ञानिकों ने इन-हाउस और भारी संसाधनों का व्यापक उपयोग करके अनेक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियां, सामग्रियां और औद्योगिक प्रक्रियाएं विकसित की हैं।
- विगत 50 वर्षों में प्रक्षेपण यानों और उपग्रहों के डिजाइन विकसित करके उनका निर्माण करने में आत्मनिर्भरता प्राप्त कर ली है।
- इसरो ने उप-प्रणालियों के निर्माण, असेम्बली तथा जांच-परख की आवश्यक टेक्नोलॉजी एवं बुनियादी सुविधाओं का विकास किया है ।
- इन उपलब्धियों के फलस्वरूप, इसरो विश्व की उन पांच प्रमुख अंतरिक्ष एजेंसियों में शामिल हो गया, जिनके पास पृथ्वी के अध्ययन, संचार, नेविगेशन और ग्रह संबंधी खोजों की पूर्ण क्षमता है।

इसरो की अंतरिक्ष परिवहन प्रणाली

इसरोअपने चार सक्रिय प्रक्षेपण यानों की सहायता से पृथ्वी की निचली, मझौली और ऊंची कक्षा में 500 किलोग्राम से 8000 किलोग्राम तक के पेलोड अंतरिक्ष में पहुंचा सकता है:

1. **ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (पीएसएलवी):** यह एक छोटा उपग्रह प्रक्षेपण यान है जिसका उपयोग मुख्य रूप से निम्न-पृथ्वी कक्षा में उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है।
    a. यह 2टी श्रेणी के पेलोड को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित करने में दुनियाभर के कमर्शियल उपभोक्ताओं को अत्यधिक भरोसेमंद और किफायती समाधान उपलब्ध कराता है।
    b. प्रक्षेपण यान एलवीएम,चार टन क्षमता वाले एलईओ तथा 6 टन क्षमता वाले जीईओ पेलोड्स के प्रक्षेपण करने में सक्षम है।
    c. इसने चन्द्रयान तथा वनवेब कमर्शियल वाहनों के प्रक्षेपण जैसे जटिल मिशनों में अभूतपूर्ण सफलता प्राप्त की है।
2. **भू-समकालिक उपग्रह प्रक्षेपण यान (जीएसएलवी):** यह एक मध्यम-वर्ग का उपग्रह प्रक्षेपण यान है जिसका उपयोग मुख्य रूप से भू-समकालिक कक्षा में उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है।
3. **जीएसएलवी मार्क III :** यह एक भारी-लिफ्ट लॉन्च वाहन है जिसका उपयोग संचार उपग्रहों और अंतरिक्ष यान सहित बड़े उपग्रहों को प्रक्षेपित करने के लिए किया जाता है।
4. **लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (एसएसएलवी):** यह भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा विकसित एक नया छोटा उपग्रह प्रक्षेपण यान है। यह 500 किलोग्राम तक के उपग्रहों को 500 किलोमीटर की कक्षा में स्थापित करने में सक्षम है।

प्रौद्योगिकी विकास और इसरो

इसरो ने अंतरिक्ष यान, उपग्रह, प्रक्षेपण यान, ग्राउंड सिस्टम और अन्य महत्वपूर्ण प्रणालियों के लिए कई प्रमुख प्रौद्योगिकियों का विकास किया है। इनमें शामिल हैं:

- **सेंसर और इनर्शियल नेविगेशन:** चंद्रयान-1 और मंगलयान जैसे मिशनों के लिए महत्वपूर्ण।
- **ऑप्टिक्स और ऑप्टोइलेक्ट्रॉनिक्स:** पृथ्वी अवलोकन और ग्रह संबंधी खोज के लिए आवश्यक।
- **उपग्रह और पेलोड डिजाइन:** विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए उपग्रहों की एक विस्तृत श्रृंखला विकसित करने में सक्षम।
- **एंटीना और रेडियो फ्रीक्वेंसी सिस्टम:** उपग्रह संचार और डेटा ट्रांसफर को बेहतर बनाता है।
- **ग्राउंड सिस्टम:** उपग्रह प्रक्षेपण और संचालन का समर्थन करता है।
- **अंतरिक्ष पारिस्थितिक जागरूकता:** उपग्रहों और अंतरिक्ष मलबे की स्थिति और व्यवहार को समझने में सक्षम।

इसरो अब अंतरिक्ष पारिस्थितिक जागरुकता (स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस) जैसी नये क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहा है, जिसमें उपग्रह, कचरे और अन्य आकाशीय पिंडों जैसी अंतरिक्ष वस्तुओं के व्यवहार और स्थिति सहित अंतरिक्ष के वातावरण की व्यापक समझ और जानकारी मिल सकेगी।

इसरो आधारभूत ढांचे का विकास

- ट्रायसोनिक विंड टनल, हाई-एल्टिच्यूड टेस्ट फेसिलिटीज, सेमी-क्रायो टेस्टिंग और इंटिग्रेशन फेसिलिटीज़ की क्षमता का विकास ।
- भारत के दक्षिणी छोर पर एक नए प्रक्षेपण पैड का निर्माण किया जा रहा है।
- भारतीय रिमोट सेंसिंग (आईआरएस) कार्यक्रम,कृषि, वन, जल संसाधन, और आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में उपयोगी है ।
- अनेक विशिष्ट क्षेत्रों में भी प्रगति हुई है जैसा कि कार्टोसेट, आरआईएसएटी (रडार इमेजिंग सेटेलाइट्स), रिसोर्ससेट, ओशियनसेट आदि ये उपभोक्ताओं को हाई रेज़ोल्यूशन डेटा उपलब्ध कराते हैं।

भारतीय क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली (आईआरएनएसएस) :

- नाविक के नाम से जाने वाली आईआरएनएसएस भारत के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो देश को नेविगेशन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाती है। यह प्रणाली भारत और उसके आसपास के क्षेत्रों में सटीक स्थिति, नेविगेशन और समय (PNT) सेवाएं प्रदान करती है।
- आईआरएनएसएस के तीन घटक हैं : अंतरिक्ष, जमीन और उपभोक्ता।
- ह प्रणाली भारत की मुख्य भूमि से लगभग 1500 किलोमीटर के घेरे में भारत और इस क्षेत्र को कवर करती है।
- यह प्रणाली भारत को नेविगेशन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाती है और विदेशी उपग्रह प्रणालियों पर निर्भरता कम करती है।

भारत की पहली अंतरिक्ष वेधशाला, एस्ट्रोसैट

- इसे 28 सितंबर, 2015 को श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से पीएसएलवी-सी30 (एक्सल) रॉकेट द्वारा लॉन्च किया गया था।
- एस्ट्रोसैट डेटा का उपयोग खगोल विज्ञान, भौतिकी, और अंतरिक्ष विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध करने के लिए किया जा रहा है।

भारत का मंगल ऑर्बिटर मिशन:

- 5 नवंबर, 2013 को भारत ने मंगलयान नामक मंगल ऑर्बिटर मिशन लॉन्च किया था। यह भारत का पहला ग्रहों के बीच का मिशन था।
- 300 दिनों की यात्रा के बाद, 24 सितंबर, 2014 को मंगलयान मंगल की कक्षा में सफलतापूर्वक प्रवेश कर गया।
- मंगल ग्रह के वातावरण (वायुमंडल), बाहरी वातावरण (एक्सोस्फीयर) और उसकी सतह की खूबियां तथा अन्य बातें जानने में बहुत मदद मिली।

चन्द्र मिशन

- चन्द्रयान-1:इसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह की संरचना और ऊंचाई का अध्ययन करना था।
- चंद्रयान-2: इस मिशन में एक ऑर्बिटर (लैंडर) और एक रोवर भेजा गया था। असफल सॉफ्ट लैंडिंग के बावजूद आर्बिटर अभी तक सक्रिय है और डेटा भेज रहा है।
- चन्द्रयान-3 :इसने 23 अप्रैल, 2023 को चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर सफल सॉफ्ट लैंडिंग की। वहां उतरने के बाद वैज्ञानिक पेलोड चंद्रमा के 14 दिनों तक वहां रहा और आसपास के वातावरण तथा स्थितियों का अध्ययन किया।

मिशन	लॉन्च तिथि	कक्षा/लैंडिंग
चंद्रयान-1	22 जुलाई, 2008	चंद्रमा की कक्षा (100 किमी)
चंद्रयान-2	22 जुलाई, 2019	ऑर्बिटर और रोवर (सॉफ्ट लैंडिंग में असफल)
चंद्रयान-3	14 जुलाई, 2023	चंद्रमा के दक्षिण ध्रुव पर सॉफ्ट लैंडिंग

आदित्य एल-1 मिशन:

- आदित्य एल-1 मिशन भारत का पहला पूर्ण रूप से सौर विज्ञान पर केंद्रित मिशन है।
- यह मिशन सूर्य के बारे में हमारी समझ को बेहतर बनाने और अंतरिक्ष के मौसम पर सौर गतिविधियों के प्रभाव को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **मिशन के मुख्य उद्देश्य:**
  - सूर्य के फोटोस्फियर, क्रोमोस्फियर और कोरोना का अध्ययन करना।
  - सौर गतिविधियों के कारण होने वाले अंतरिक्ष के मौसम को समझना।
  - सौर विकिरण, ऊष्मा, कण प्रवाह और चुंबकीय क्षेत्रों का अध्ययन करना।

इसरो की महत्वाकांक्षी योजनाएं:

- **ज्ञानिक अनुसंधान का एक्सपोसेट मिशन:**इस मिशन का उद्देश्य विभिन्न वैज्ञानिक उपकरणों और प्रौद्योगिकियों का परीक्षण करना है
- **नासा-इसरो सिंथेटिक अपरेंट टेम्प्रेचर राडार (एनआईएसएआर) पहल:** यह पहल पृथ्वी की सतह और वातावरण का अध्ययन करने के लिए एक नए प्रकार के रडार का उपयोग करेगी तथा जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद करेगी
- **अंतरिक्ष स्टेशन :**इसरो भारत अंतरिक्ष स्टेशन के निर्माण की योजना बना रहा है

निष्कर्ष

इसरो की महत्वाकांक्षी योजनाएं भारत को अंतरिक्ष विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण में एक प्रमुख शक्ति बनाने में मदद करेंगी। इन योजनाओं का क्रियान्वयन भारत के वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमताओं को प्रदर्शित करेगा और दुनिया भर के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के लिए नए अवसर पैदा करेगा।

भारत का बढ़ता रुतबा एक उभरती हुई शक्ति

परिचय

- वर्तमान विश्व राजनीति में, भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और संघर्ष ने वैचारिक और क्षेत्रीय विभाजन में और भी वृद्धि की है।
- कोविड-19 महामारी ने वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं को कमजोर कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप गहरे विभाजन और असंतोष उत्पन्न हुए हैं।
- इस अस्थिर वातावरण में, भारत ने जी20 की अध्यक्षता ग्रहण करके एक नया मार्ग प्रशस्त किया है, जो एक मूल्य-आधारित दृष्टिकोण और वैश्विक सहयोग पर बल देता है।

भारत की सफलताएँ:

- भारत ने जी20 अध्यक्षता के दौरान, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने, व्यापक-आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा देने, डिजिटल पब्लिक बुनियादी ढांचे का निर्माण करने, जलवायु परिवर्तन का मुकाबला करने, और बहुपक्षीय संरचनाओं में सुधार लाने जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर आम सहमति बनाने में सफलता प्राप्त की है।
- भारत ने वैश्विक समुदाय को एकजुट करने और वैश्विक मुद्दों पर एक समन्वित प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- भारत ने "वसुधैव कुटुम्बकम" (एक पृथ्वी, एक परिवार) की अपनी अवधारणा को बढ़ावा दिया, जो मानवता के लिए एक समावेशी और टिकाऊ भविष्य की वकालत करता है।

भारत की पहलें :

- महामारी के दौरान वैक्सीन सहायता कार्यक्रम
- अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए)
- आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन (सीडीआरआई)
- इंडो-पैसिफिक महासागर पहल (आईपीओआई)
- लचीले द्वीप राज्यों के लिए बुनियादी ढांचा
- ग्रीन ग्रिड पहल-वन सन वन वर्ल्ड वन ग्रिड (ओएसओडब्ल्यूओजी)

भारतीय नेतृत्व

- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के आदर्श वाक्य और वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन पर आधारित, भारत ने जी20 में अफ्रीकी संघ (एयू) को शामिल किया।
- यह "किसी को भी पीछे नहीं छोड़ना" संबंधी भारत की वकालत को दर्शाता है।
- जी20 संरचना को अधिक प्रतिनिधिक बनाकर, भारत वैश्विक दक्षिण के एक सच्चे मित्र के रूप में अपनी भूमिका को मजबूत करता है।

मिशन लाइफ और जलवायु संकट

- जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय गिरावट गंभीर खतरा पैदा करते हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, भारत ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यापार पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय एक नैतिक दृष्टिकोण अपनाया है।
- मिशन लाइफ, जिसे पहली बार ग्लासगो में पीएम मोदी द्वारा पेश किया गया था, स्थायी उपभोग पैटर्न के आधार पर पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को बढ़ावा देता है
- मिशन लाइफ जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए भारत का एक व्यापक दृष्टिकोण है। यह व्यक्तिगत व्यवहार, सामुदायिक भागीदारी और सरकारी कार्रवाई पर केंद्रित है। मिशन लाइफ के मुख्य लक्ष्यों में शामिल हैं:
    - स्थायी जीवन शैली को बढ़ावा देना
    - पर्यावरण के अनुकूल व्यवहार को अपनाना
    - जलवायु कार्रवाई के लिए जागरूकता और समर्थन बढ़ाना

भारत की उपलब्धियां:

- यह पेरिस समझौते के अपने लक्ष्यों को समय से पहले हासिल करने वाला एकमात्र जी20 देश है। भारत स्वच्छ ऊर्जा में भी अग्रणी है, जिसमें 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य है और 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करना है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग:

- यूरोपीय संघ, जापान और अमेरिका के साथ द्विपक्षीय स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी।
- यूएस इंडिया स्ट्रेटेजिक क्लीन एनर्जी पार्टनरशिप (यूएसआईएससीईपी)।
- यूरोपीय संघ और भारत स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी (सीईसीपी)।

लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएँ

आज की अस्थिर वैश्विक अर्थव्यवस्था में, लचीली आपूर्ति श्रृंखलाएँ राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण हैं। भारत ने इस चुनौती का सामना करने के लिए कई रणनीतिक पहलें की हैं:

- $10 बिलियन की उत्पादन-लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना और सेमीकॉन इंडिया कार्यक्रम।
- सेमीकंडक्टर डिजाइन प्रतिभा: भारत में दुनिया के 20% सेमीकंडक्टर डिज़ाइन इंजीनियर हैं। शीर्ष 25 सेमीकंडक्टर डिजाइन कंपनियों में से अधिकांश के डिजाइन या अनुसंधान एवं विकास केंद्र भारत में हैं।
- त्रिपक्षीय आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल: ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ सहयोग।

डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर

- भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। 'डिजिटल इंडिया' पहल के माध्यम से, भारत ने पिछले कुछ वर्षों में डिजिटलीकरण में उल्लेखनीय प्रगति की है।
- सरकार द्वारा प्रौद्योगिकी अपनाने से शासन में पारदर्शिता में उल्लेखनीय वृद्धि सुनिश्चित हुई है।
- आज, लगभग सभी सरकारी कार्यक्रमों में एक डिजिटल डैशबोर्ड होता है जो लाभार्थियों के सभी विवरण प्रदान करता है।
- वर्ष 2021 में, भारत ने 48 बिलियन वास्तविक समय डिजिटल लेनदेन, या वैश्विक कुल का 40 प्रतिशत दर्ज किया। दिलचस्प बात यह है कि यह चीन से लगभग तीन गुना अधिक है और अमेरिका, कनाडा, यूके, फ्रांस और जर्मनी की संयुक्त रीयल टाइम भुगतान मात्रा से सात गुना अधिक है।

भारत: योग, आयुर्वेद और वैश्विक स्वास्थ्य

- भारत सदैव वैश्विक स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। कोविड-19 महामारी के दौरान, भारत ने 100 से अधिक देशों को मुफ्त टीके प्रदान किए और अफगानिस्तान, यूक्रेन और अफ्रीकी देशों को खाद्य सहायता और मानवीय सहायता भेजी।
- भारत वैश्विक स्वास्थ्य और कल्याण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। योग और आयुर्वेद जैसी पारंपरिक प्रथाओं को बढ़ावा देकर, भारत दुनिया को स्वस्थ जीवन जीने के तरीके सिखा रहा है।
- भारत ने अन्य विकासशील देशों को कोविन और आरोग्य सेतु जैसे ओपन सोर्स ऐप प्रदान किए हैं।

मिलेट्स यानी श्रीअन्न या मोटे अनाज का अंतरराष्ट्रीय वर्ष

- खाद्य सुरक्षा और वैश्विक पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए मिलेट्स की क्षमता को पहचानते हुए, भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र को प्रस्ताव दिया कि 2023 को अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष 2023) घोषित किया जाए।

- यह अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में एक प्राथमिक खाद्य फसल है, जहां पारंपरिक खाद्य फसलें सीमित वर्षा और खराब मिट्टी की गुणवत्ता के कारण पनपने के लिए संघर्ष करती हैं।
- मधुमेह जैसी जीवनशैली से जुड़ी बीमारियों और परिष्कृत आहार के प्रचलन के बारे में बढ़ती चिंताओं को देखते हुए, आधुनिक उपभोक्ता धीरे-धीरे गेहूं और चावल जैसे मुख्य खाद्य पदार्थों के व्यवहार्य विकल्प के रूप में ग्लूटेन-मुक्त मिलेट्स की ओर रुख कर रहे हैं।

निष्कर्ष

- भारत आज विविध क्षेत्रों में नेतृत्व की भूमिका निभाने और व्यापक रूप से कल्याण करने में योगदान देने को इच्छुक है।
- आज, व्यापार, सैन्य या वैचारिक टकराव में उलझे कई अन्य लोगों के विपरीत, भारत एक विश्व मित्र (वैश्विक मित्र), एक - विश्व गुरु (वैश्विक शिक्षक) और एक विश्व वैद्य (वैश्विक चिकित्सक) के रूप में उभरा है।
- भारत 2047 में अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, तो वह एक जिम्मेदार वैश्विक शक्ति होगा।

खेल कौशल :ऐतिहासिक जीत का साल

परिचय

एशियाई खेल 2022 भारत के लिए एक ऐतिहासिक आयोजन रहा है, जिसमें भारतीय एथलीटों ने शानदार प्रदर्शन किया है। यह खेल पारिस्थितिकी तंत्र के विकास और महिला एथलीटों के उभरते वर्चस्व का प्रतीक है।

एशियाई खेल 2022: एक ऐतिहासिक प्रदर्शन

- भारतीय एथलीटों ने 2022 के एशियाई खेलों में एक ऐतिहासिक प्रदर्शन करते हुए 60 वर्षों में सर्वाधिक पदक (107) जीते। 2018 के खेलों की तुलना में यह 75% अधिक स्वर्ण पदक हैं। 16 नई खेल श्रेणियों में पदक जीतकर भारत ने अपनी बढ़ती बेंच स्ट्रेंथ और खेल पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार का प्रमाण दिया है।

महिला एथलीटों का उल्लेखनीय प्रदर्शन:

- कुल पदकों में से लगभग 50% पदक महिला एथलीटों द्वारा जीते गए।
- तीरंदाजों ने 3 स्वर्ण और 2 कांस्य पदक जीते।
- यह महिला एथलीटों के अटूट समर्पण, प्रतिभा और कड़ी मेहनत का प्रमाण है।
- यह उनके कौशल और बाधाओं के बावजूद सफल होने के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

पैरा एशियाई खेलों में शानदार प्रदर्शन:

- भारतीय पैरा एथलीटों ने पैरा एशियाई खेलों में 29 स्वर्ण पदक सहित 111 पदक जीते।
- यह अब तक का भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है।
- भारत समग्र पदक तालिका में 5वें स्थान पर रहा।
- इन खेलों में भारत ने इस वर्ष खिलाड़ियों का अपना सबसे बड़ा दल भेजा, जिसमें 303 एथलीट (191 पुरुष और 112 महिला) शामिल थे।

युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा खेल प्रोत्साहन योजनाएं:

युवा मामले और खेल मंत्रालय (एमओवाईएस) ने भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) के माध्यम से देश भर में विभिन्न खेल प्रोत्साहन योजनाएं लागू की हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य खेल प्रतिभाओं की पहचान करना, उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना और उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करना है।

प्रमुख योजनाएं:

- **राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई):** एनसीओई देश के शीर्ष खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों में अत्याधुनिक सुविधाएं और अनुभवी प्रशिक्षक उपलब्ध हैं।
- **एसएआई के प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी):** एसटीसी देश भर में स्थित हैं और विभिन्न खेलों में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इन केंद्रों में युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और उन्हें राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार किया जाता है।
- **एसटीसी का विस्तार केंद्र:** एसटीसी के विस्तार केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित हैं और इनका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में खेल प्रतिभाओं की पहचान करना और उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करना है।
- **राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता (एनएसटीसी):** एनएसटीसी एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता है जिसका उद्देश्य देश के शीर्ष युवा खिलाड़ियों की पहचान करना है। इस प्रतियोगिता में विभिन्न खेलों में प्रतिस्पर्धा होती है और विजेता खिलाड़ियों को एनसीओई और एसटीसी में प्रशिक्षण के लिए चुना जाता है।
- **खेलो इंडिया योजना:** खेलो इंडिया योजना एमओवाईएस द्वारा शुरू की गई एक प्रमुख पहल है। इस योजना का उद्देश्य देश में खेलों को बढ़ावा देना और युवा खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करना है। इस योजना के तहत विभिन्न खेलों में राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, इस योजना के तहत प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है।
- **टॉप्स (टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम):** टॉप्स योजना एमओवाईएस द्वारा शुरू की गई एक और प्रमुख पहल है। इस योजना का उद्देश्य ओलंपिक खेलों में पदक जीतने वाले खिलाड़ियों को सहायता प्रदान करना है। इस योजना के तहत खिलाड़ियों को प्रशिक्षण, उपकरण, आवास और चिकित्सा सुविधाओं जैसी विभिन्न सुविधाएं प्रदान की जाती हैं।

2022 में भारत की खेल उपलब्धियों का विश्लेषण:

2022 निश्चित रूप से भारत के लिए खेलों का एक ऐतिहासिक वर्ष रहा। विभिन्न खेलों में अभूतपूर्व प्रदर्शन ने देश को वैश्विक स्तर पर ख्याति दिलाई। आइए कुछ प्रमुख उपलब्धियों पर गहन नज़र डालें:

- **थॉमस कप जीत:** भारत ने पहली बार प्रतिष्ठित थॉमस कप बैडमिंटन खिताब जीता, 14 बार चैंपियन इंडोनेशिया को हराकर। यह उपलब्धि भारतीय बैडमिंटन के लिए एक क्रांतिकारी क्षण थी और युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी।
- **निकहत ज़रीन का विश्व चैंपियनशिप खिताब:** निकहत ज़रीन, 52 किलोग्राम भार वर्ग में, विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप जीतने वाली पहली भारतीय महिला मुक्केबाज बनीं। यह भारत के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी और महिला मुक्केबाजी में देश की बढ़ती क्षमता को दर्शाता है।
- **महिला हॉकी टीम का एफआईएच नेशंस कप खिताब:** भारतीय महिला हॉकी टीम ने उद्घाटन एफआईएच नेशंस कप जीता, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसी मजबूत टीमों को हराकर। यह भारत के लिए एक महत्वपूर्ण क्षण था और महिला हॉकी में देश के पुनरुत्थान का संकेत था।
- **विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक:** नीरज चोपड़ा, ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता, ने विश्व एथलेटिक्स चैंपियनशिप में रजत पदक जीता। यह भारत के लिए इस चैंपियनशिप में लगातार दूसरा पदक था और चोपड़ा की लगातार सफलता को दर्शाता है।
- **राष्ट्रमंडल खेलों में मीराबाई चानू का स्वर्ण पदक:** मीराबाई चानू ने राष्ट्रमंडल खेलों में 49 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीता, दो रिकॉर्ड भी तोड़े। यह भारत के लिए एक शानदार उपलब्धि थी और चानू की निरंतर उत्कृष्टता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

एमओवाईएस द्वारा शुरू की गई विभिन्न खेल प्रोत्साहन योजनाओं ने देश में खेलों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप, भारत ने अंतरराष्ट्रीय खेलों में अपनी उपस्थिति मजबूत की है।

आवागमन का पुनर्निर्धारण: भारत में परिवहन परिदृश्य में बदलाव

परिचय

- परिवहन की एक सुव्यवस्थित और समन्वित प्रणाली किसी देश की निरंतर आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। देश की वर्तमान परिवहन प्रणाली में रेल, सड़क, तटीय शिपिंग, हवाई परिवहन आदि सहित परिवहन के कई तरीके शामिल हैं।
- नौवहन मंत्रालय, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्रालय, रेल मंत्रालय और नागर विमानन मंत्रालय परिवहन के विभिन्न तरीकों के विकास के लिए नीतियों और कार्यक्रमों के निर्माण और कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं।

सड़क

- सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय का गठन 2009 में तत्कालीन जहाजरानी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को दो स्वतंत्र मंत्रालयों में विभाजित करके किया गया था। सड़क परिवहन और परिवहन अनुसंधान से संबंधित नियमों, विनियमों और कानूनों के निर्माण और प्रशासन के लिए सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय शीर्ष संगठन है।
- यातायात (यात्री और माल) को संभालने की दृष्टि से राष्ट्रीय राजमार्गों की क्षमता औद्योगिक विकास के अनुरूप होनी चाहिए। भारत में लगभग 62.16 लाख कि.मी. सड़क नेटवर्क है, जो दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा है।

भारतमाला परियोजना

- भारतमाला परियोजना में लगभग 26,000 कि.मी. लंबे आर्थिक गलियारों के विकास की परिकल्पना की गई है, जिसमें स्वर्णिम चतुर्भुज (GQ) और उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम (NS- EW) गलियारों के साथ-साथ सड़कों पर अधिकांश माल ढुलाई की संभावना है।
- इसके अलावा, आर्थिक गलियारों, जीक्यू और एनएस-ईडब्ल्यू गलियारों की प्रभावशीलता में सुधार के लिए लगभग 8,000 किलोमीटर के अंतर गलियारे और लगभग 7,500 किलोमीटर के फीडर मार्गों की पहचान की गई है।

हरित राष्ट्रीय राजमार्ग गलियारा परियोजना

- हरित राजमार्ग नीति के तहत हरित राष्ट्रीय राजमार्ग गलियारा परियोजना (जीएनएचसीपी) 2016 में शुरू की गई थी। इस परियोजना में राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और आंध्र प्रदेश से गुजरने वाले लगभग 781 किलोमीटर विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्गों का उन्नयन शामिल है।
- यह परियोजना विश्व बैंक की सहायता से चलाई जा रही है। वाहनों की संख्या में वृद्धि के कारण लगातार बढ़ते ध्वनि प्रदूषण के प्रभाव को कम करना, तटबंध के ढलानों पर मिट्टी के कटाव को रोकना, आदि परियोजना के उद्देश्यों में शामिल हैं।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण

- भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) की स्थापना एनएचएआई अधिनियम, 1988 के तहत की गई थी। इसे राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (एनएचडीपी) सौंपी गई है, जिसमें अन्य छोटी परियोजनाओं के साथ, 50,329 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास, रखरखाव और प्रबंधन शामिल किया गया है।
- देश में राष्ट्रीय राजमार्ग (एक्सप्रेसवे सहित) की कुल लंबाई 1,32,499 कि.मी. है। जबकि राजमार्ग/एक्सप्रेसवे सभी सड़कों की लंबाई का लगभग 1.7 प्रतिशत ही हैं, किंतु वे सड़क यातायात का लगभग 40 प्रतिशत वहन करते हैं।

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना

- राष्ट्रीय राजमार्ग विकास परियोजना (एनएचडीपी) देश में प्रमुख राजमार्गों के उच्च मानक तक उन्नत, पुनर्निर्माण और चौड़ीकरण की एक परियोजना है। यह परियोजना 1998 में शुरू की गई थी।
- इस परियोजना का प्रबंधन सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के तहत भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण द्वारा किया जाता है। एनएचडीपी को मौजूदा भारतमाला परियोजना में शामिल कर दिया गया है।

पीएम गति शक्ति योजना

- पीएम गति शक्तिः मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी के लिए राष्ट्रीय मास्टर प्लान, 2021 मूल रूप से आधारभूत कनेक्टिविटी परियोजनाओं की एकीकृत योजना और समन्वित कार्यान्वयन के लिए रेलवे और रोडवेज सहित 16 मंत्रालयों को एक साथ लाने के लिए एक डिजिटल मंच है।
- एकीकृत और निर्बाध कनेक्टिविटी से आधारभूत सुविधाओं को अंतिम दूरी तक पहुंचाने में मदद मिलेगी और लोगों के लिए यात्रा में लगने वाला समय भी कम होगा।

पर्वतमाला परियोजना

- यात्रियों के लिए पहुंच और सुविधा में सुधार और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रोपवे के विकास के लिए पर्वतमाला परियोजना-राष्ट्रीय रोपवे विकास कार्यक्रम लागू किया जा रहा है।
- पहाड़ी क्षेत्रों के साथ-साथ, वाराणसी, उज्जैन जैसे भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्रों में परिवहन के वैकल्पिक साधन के रूप में रोपवे विकसित किए जा रहे हैं।

राष्ट्रीय वाहन रजिस्ट्री और लाइसेंस रिकॉर्ड

- ट्रांसपोर्ट मिशन मोड प्रोजेक्ट ने आरटीओ संचालन को सफलतापूर्वक स्वचालित कर दिया है और एक समेकित परिवहन डेटाबेस स्थापित किया है। इस मिशन मोड प्रोजेक्ट के मुख्य पहलू दो प्रमुख अनुप्रयोग हैं-वाहन और सारथी।
- जहां वाहन देश भर में वाहन पंजीकरण, कराधान, परमिट, फिटनेस और संबंधित सेवाओं को समेकित करता है, वहीं सारथी ड्राइविंग लाइसेंस, लर्नर लाइसेंस, ड्राइविंग स्कूल और संबंधित गतिविधियों की देखभाल करता है।

ई-टोलिंग

- राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन (एनईटीसी) कार्यक्रम, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की प्रमुख पहल, शुल्क प्लाजा के माध्यम से यातायात की निर्बाध आवाजाही सुनिश्चित करने और फास्टैग का उपयोग करके उपयोगकर्ता शुल्क के संग्रह में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए अखिल भारतीय आधार पर लागू किया गया है।

रेलवे

- रेलवे माल और यात्रियों के लिए परिवहन का प्रमुख साधन है। 1853 में जब पहली ट्रेन मुंबई से ठाणे तक चली, तब यह एक बहुत ही मामूली शुरुआत थी। तब यह सिर्फ 34 कि.मी. की दूरी तय करती थी।
- अब तो 7,308 स्टेशनों, 68,043 कि.मी. की रूट लंबाई में फैले भारतीय रेलवे 13,215 लोकोमोटिव, 74,744 यात्री सेवा वाहन, 10,103 अन्य कोचिंग वाहन और 3,18,896 वैगन के बेड़े के साथ विशाल नेटवर्क में विकसित हो गया है।
- रूट किलोमीटर का लगभग 74.06 प्रतिशत और रनिंग ट्रैक किलोमीटर का 80.38 प्रतिशत और कुल ट्रैक किलोमीटर का 78.46 प्रतिशत विद्युतीकृत है। नेटवर्क को 17 जोन में बांटा गया है। डिवीजन इसकी आधारभूत परिचालन इकाइयां हैं। 17 जोन और उनके संबंधित मुख्यालय तालिका में दिए गए हैं।

जोनल रेलवे	मुख्यालय
मध्य	मुंबई
पूर्व	कोलकाता
पूर्वी तट	भुवनेश्वर
पूर्व-मध्य	हाजीपुर
उत्तर	नई दिल्ली
उत्तर-मध्य	प्रयागराज
उत्तर-पूर्व	गोरखपुर
पूर्वोत्तर सीमांत	मालीगांव (गुवाहाटी)
उत्तर-पश्चिम	जयपुर
दक्षिण	चेन्नई
दक्षिण-मध्य	सिकंदराबाद
दक्षिण-पूर्व	कोलकाता
दक्षिण-पूर्व-मध्य रेलवे	बिलासपुर
दक्षिण-पश्चिम रेलवे	हुबली (हुबली)
पश्चिम	मुंबई
पश्चिम-मध्य रेलवे	जबलपुर

अनुसंधान और विकास

- लखनऊ में अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) भारतीय रेलवे का अनुसंधान एवं विकास विंग है। यह तकनीकी मामलों में सलाहकार के रूप में कार्य करता है। यह रेलवे निर्माण और डिजाइन से जुड़े अन्य संगठनों को भी परामर्श प्रदान करता है।

रेलवे वित्त

- रेलवे बजट भारत सरकार के समग्र वित्तीय आंकड़ों का एक हिस्सा है। 1924-25 से रेलवे बजट को संसद में अलग से पेश किया जा रहा था। सरकार ने 2017-18 से रेल बजट को आम बजट में मिलाने का फैसला किया।

वंदे भारत एक्सप्रेस

- वंदे भारत एक्सप्रेस को पहले ट्रेन 18 के नाम से जाना जाता था। यह भारतीय रेल द्वारा संचालित एक सेमी हाईस्पीड, इलेक्ट्रिक मल्टीपल-यूनिट ट्रेन है। इसका निर्माण पूरी तरह से भारत में किया गया है।
- वंदे भारत 2.0 की शुरुआत 2022 में गांधीनगर से मुंबई रूट के साथ हुई। सितंबर 2023 तक, देश भर में 50 वंदे भारत ट्रेनें चल रही थीं।

नौवहन मंत्रालय

- नौवहन मंत्रालय का गठन 2009 में तत्कालीन जहाजरानी, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को दो स्वतंत्र मंत्रालयों में विभाजित करके किया गया था। 2020 में मंत्रालय का नाम बदलकर पोत, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय कर दिया गया।
- मंत्रालय अपने दायरे में नौवहन और बंदरगाह क्षेत्रों को शामिल करता है, जिसमें जहाज निर्माण और जहाज की मरम्मत, प्रमुख बंदरगाह और अंतरदेशीय जल परिवहन भी शामिल हैं।

समुद्री विकास

- भारत की लगभग 7,517 कि.मी. लंबा समुद्र तट है, जो मुख्य भूमि के पश्चिमी और पूर्वी शेल्फ और द्वीपों के साथ-साथ फैली हुई है।
- भारतीय नौवहन उद्योग ने वर्षों से परिवहन अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश का लगभग 95 प्रतिशत व्यापार मात्रा के हिसाब से और 68 प्रतिशत मूल्य के हिसाब से समुद्री परिवहन के माध्यम से होता है।

सागरमाला कार्यक्रम

- समुद्र तट, 14,500 किलोमीटर के संभावित नौगम्य जलमार्ग और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्गों पर रणनीतिक स्थान का उपयोग करने के लिए, भारत सरकार ने देश में पोर्टेड विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वाकांक्षी सागरमाला कार्यक्रम शुरू किया है।
- कार्यक्रम के उद्देश्यों में बंदरगाह का आधुनिकीकरण, नए बंदरगाहों का विकास, बंदरगाह कनेक्टिविटी, तटीय सामुदायिक विकास आदि शामिल हैं।

प्रमुख बंदरगाह

- बंदरगाह समुद्री परिवहन और भूमि-आधारित परिवहन के बीच एक इंटरफेस प्रदान करते हैं और समग्र आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- भारत की लगभग 7,517 कि.मी. लंबी तटरेखा पर 12 प्रमुख बंदरगाह और लगभग 205 गैर-प्रमुख बंदरगाह हैं।
- प्रमुख बंदरगाह केंद्र सरकार के सीधे प्रशासनिक नियंत्रण में हैं और संघ सूची (संविधान की 7वीं अनुसूची) में शामिल हैं। प्रमुख बंदरगाहों के अलावा अन्य बंदरगाह संबंधित समुद्री राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में हैं और समवर्ती सूची में शामिल हैं।

अंतरदेशीय जल परिवहन

- भारत में लगभग 14,500 कि.मी. लंबा नौगम्य अंतरदेशीय जलमार्ग नेटवर्क है। हालांकि, इसके माध्यम से माल परिवहन वर्तमान में देश में कुल माल परिवहन का 2 प्रतिशत से भी कम है।

- भारतीय अंतरदेशीय जलमार्ग प्राधिकरण (आईडब्ल्यूएआई) की स्थापना 1986 में देश में शिपिंग और नेविगेशन के प्रयोजनों के लिए अंतरदेशीय जलमार्गों के विनियमन और विकास के लिए की गई थी।
- सरकार ने आईडब्ल्यूटी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देश में अंतरदेशीय जल परिवहन को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय जलमार्ग अधिनियम, 2016 के तहत 24 राज्यों में फैले 111 (5 मौजूदा और 106 नए सहित) राष्ट्रीय जलमार्ग (एनडब्ल्यू) की घोषणा की।

नागर विमानन

- नागर विमानन मंत्रालय अपने दायरे में देश के नागरिक उड्डयन क्षेत्र को शामिल करता है, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ हवाई परिवहन, हवाई क्षेत्र प्रबंधन, गैर-वाणिज्यिक उड़ान और नागरिक उड्डयन इंफ्रास्ट्रक्चर शामिल हैं।
- यह विमान अधिनियम, 1934, विमान नियम, 1937, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अधिनियम, 1994, वायुयान द्वारा वहन अधिनियम, 1972 और नागरिक उड्डयन क्षेत्र से संबंधित अन्य कानूनों का प्रबंधन करता है।
- यह अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन पर कन्वेंशन, 1944 ('शिकागो कन्वेंशन') को पूरा करने के लिए कानून तैयार करता है।

क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना

- क्षेत्रीय कनेक्टिविटी योजना (आरसीएस) उड़े देश का आम नागरिक (उड़ान) की परिकल्पना राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति (एनसीएपी) 2016 में की गई थी।
- आरसीएस-उड़ान का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्रीय मार्गों पर एयरलाइन संचालन की लागत को कम करने के लिए केंद्र सरकार, राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेशों के प्रशासन और हवाईअड्डा संचालकों द्वारा रियायतें जैसे उपाय करना है और क्षेत्रीय हवाई कनेक्टिविटी को किफायती बनाकर इसे सुविधाजनक बनाना/प्रोत्साहित करना है।

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण

- भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई), वैधानिक रूप से भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण अधिनियम, 1994 के तहत गठित किया गया था, जिसे पूर्ववर्ती अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा प्राधिकरण और राष्ट्रीय हवाईअड्डा प्राधिकरण के विलय द्वारा बनाया गया था।
- एएआई 133 हवाई अड्डों का प्रबंधन करता है, जिसमें 23 अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (3 सिविल एन्क्लेव सहित), 10 सीमा शुल्क हवाई अड्डे (4 सिविल एन्क्लेव सहित) और 100 घरेलू हवाई अड्डे (22 सिविल एन्क्लेव सहित) शामिल हैं।

विमानपत्तन आर्थिक नियामक प्राधिकरण (एईआरए)

- यह विमानपत्तन आर्थिक नियामक प्राधिकरण अधिनियम, 2008 के तहत गठित एक वैधानिक निकाय है। एईआरए को हवाई अड्डों पर प्रदान की जाने वाली वैमानिक सेवाओं के लिए टैरिफ और अन्य शुल्कों को विनियमित करने और हवाई अड्डों के प्रदर्शन मानकों की निगरानी करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

अंतरराष्ट्रीय कनेक्टिविटी

- भारत अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का एक विस्तृत नेटवर्क संचालित करता है और वर्तमान में 116 देशों के साथ हवाई सेवा समझौता है। भारत वर्तमान में 52 से अधिक देशों को सीधी कनेक्टिविटी प्रदान करता है, जबकि 100 से अधिक देशों को अप्रत्यक्ष मार्गों से जोड़ता है।
- राष्ट्रीय नागरिक उड्डयन नीति, 2016 के संदर्भ में, ओपन स्काई व्यवस्था 6 भारतीय मेट्रो हवाई अड्डों यथा दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, हैदराबाद एवं बेंगलुरु से सीधे मौजूदा द्विपक्षीय अधिकारों के अलावा असीमित उड़ानों की अनुमति देती है।

बायोमेट्रिक समर्थित निर्बाध यात्रा

- डिजीयात्रा नीति यात्रियों को मल्टीपल टच प्वाइंट पर टिकट और आईडी के सत्यापन की आवश्यकता के बिना हवाई अड्डों पर निर्बाध और परेशानी मुक्त अनुभव प्रदान करने के लिए नागर विमानन मंत्रालय द्वारा शुरू की गई एक पहल है।
- अक्टूबर, 2023 तक यह 13 हवाई अड्डों अर्थात् दिल्ली, बेंगलुरु, वाराणसी, हैदराबाद, पुणे, कोलकाता, विजयवाड़ा, मुंबई, लखनऊ, अहमदाबाद, जयपुर, कोच्चि और गुवाहाटी हवाई अड्डों पर चालू है।

जीपीएस समर्थित जियो ऑगमेंटेड नेविगेशन (गगन)

- गगन एक सहयोगी प्रणाली है जिसे विशेष रूप से नागरिक उड्डयन में सटीक दृष्टिकोण के लिए जीपीएस सिग्नल की सटीकता और विश्वसनीयता में सुधार करने के लिए भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। यह 2015 से पूर्ण परिचालन में है और चौबीसों घंटे (24x7) उपलब्ध है।

कृषि उड़ान 2.0

- कृषि उड़ान 2.0 योजना भारतीय मालवाहक और यात्री से कार्गो के लिए लैंडिंग, पार्किंग, टर्मिनल नेविगेशनल लैंडिंग चार्ज (टीएनएलसी), और रूट नेविगेशन सुविधा शुल्क (आरएनएफसी) की पूर्ण छूट प्रदान करके हवाई परिवहन द्वारा कार्गो की आवाजाही को सुविधाजनक बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए 2021 में शुरू की गई थी।
- इस योजना का लक्ष्य देश के विशेष रूप से उत्तर-पूर्व, पहाड़ी और आदिवासी क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाली सभी कृषि उपज के लिए निर्बाध, किफायती, समयबद्ध, हवाई परिवहन और संबंधित रसद सुनिश्चित करना है। इस योजना में देश के कुल 58 हवाई अड्डे शामिल हैं।

सुगम्य भारत अभियान

- सुगम्य भारत अभियान, दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के अनुरूप, नागर विमानन मंत्रालय ने लोगों को व्यापक पहुंच मानकों को समझने में सहायता करने के लिए 'नागरिक उड्डयन क्षेत्र के लिए पहुंच मानक और दिशानिर्देश' प्रकाशित किए हैं।
- यह पहल सभी यात्रियों के अधिकारों और सम्मान का समर्थन करके हवाई यात्रा को अधिक न्यायसंगत और सुविधाजनक बनाने के प्रयास को दर्शाती है।

भारत का उद्योग क्षेत्र

परिचय

- वर्ष 2021 में शुरू की गई पीएम गतिशक्ति में समग्र शासन के दृष्टिकोण को अपनाया गया है। एकीकरण, तालमेल, प्राथमिकता निर्धारण और अधिकतम परिणाम को हासिल करने के लिए इसके दो पहलू हैं।
- इनमें से पहला भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस) आधारित प्रौद्योगिकी प्लेटफॉर्म राष्ट्रीय मास्टर प्लान का विकास है। दूसरा पहलू तीन स्तरीय संस्थागत व्यवस्था की स्थापना के जरिए बहुविध अवसंरचना और आर्थिक क्षेत्र के तालमेल के साथ विकास के लिए विभिन्न संबंधित मंत्रालयों और विभागों के प्रयासों को एकजुट करने के उद्देश्य से प्रशासनिक व्यवस्था करना है।

राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति

- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (एनएलपी) 2022 में शुरू की गई थी। यह लॉजिस्टिक्स क्षेत्र के लिए एक व्यापक अंतःविषय, क्रॉस-सेक्टोरल, बहु-क्षेत्राधिकार और व्यापक नीतिगत ढांचा तैयार करती है। यह नीति पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान की पूरक है।

- इसका उद्देश्य त्वरित और समावेशी विकास के लिए तकनीकी रूप से सक्षम, संपूर्ण, कम लागत वाला, लचीला, टिकाऊ और विश्वसनीय लॉजिस्टिक्स पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करना है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति

- उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) पर नीति तैयार करने वाला मुख्य विभाग है। उदार प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) नीति द्वारा स्वचालित मार्ग के तहत अधिकांश क्षेत्रों/गतिविधियों में 100 प्रतिशत तक एफडीआई की अनुमति दी गई है।
- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के लिए दायर किए गए आवेदनों की मंजूरी की सुविधा के लिए विदेशी निवेश सुविधा पोर्टल (एफआईएफ) का प्रबंधन और संचालन उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा किया जाता है। अगस्त 2022 से, एफआईएफ पोर्टल को नेशनल सिंगल विंडो सिस्टम (एनएसडब्ल्यूएस) के साथ एकीकृत किया गया है।

मेक इन इंडिया

- 'मेक इन इंडिया' पहल 2014 में निवेश को सुविधाजनक बनाने, नवाचार को बढ़ावा देने, सर्वोत्तम श्रेणी के बुनियादी ढांचे का निर्माण करने और भारत को विनिर्माण, डिजाइन और नवाचार का केंद्र बनाने के लिए शुरू की गई थी।
- यह अनूठी पहल 'वोकल फॉर लोकल' जैसी पहलों में से एक है। इस पहल ने महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की है और वर्तमान में मेक इन इंडिया 2.0 के तहत 27 क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना (पीएलआई योजना)

- भारत के 'आत्मनिर्भर' बनने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, भारत की विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ाने के लिए 1.97 लाख करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ 14 प्रमुख क्षेत्रों के लिए पीएलआई (उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन) योजनाओं की घोषणा की गई।
- पीएलआई योजनाओं का प्रमुख उद्देश्य मुख्य योग्यता और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में निवेश आकर्षित करना और भारतीय कंपनियों और निर्माताओं को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना हैं।

स्टार्टअप इंडिया

- 'स्टार्टअप इंडिया' पहल 2016 में शुरू की गई थी। इस पहल का उद्देश्य नए स्टार्टअप के विकास के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र बनाकर उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा देना है।
- यह पहल उद्यमशीलता को प्रोत्साहित करने के लिए तीन प्रमुख स्तंभों यानी (क) सरलीकरण और हैंडहोल्डिंग, (ख) वित्तीय सहायता और प्रोत्साहन, और (ग) उद्योग-अकादमिक साझेदारी और बिजनेस इन्क्यूबेशन में मदद उपलब्ध कराती है।
- इस पहल की शुरुआत के बाद से, मौजूदा नीति पारिस्थितिकी तंत्र में कई रणनीतिक संशोधन पेश किए गए हैं। उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग द्वारा 15 मई 2023 तक, 674 जिलों में 57 क्षेत्रों में कुल 99,371 स्टार्टअप को मान्यता दी गई है।
- उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग ने स्टार्टअप्स की फंडिंग जरूरतों को पूरा करने के लिए 10,000 करोड़ रुपये के कोष के साथ फंड ऑफ फंड्स (एफएफएस) की स्थापना की।
- उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग ने 945 करोड़ रुपये के परिव्यय के साथ स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना (एसआईएसएफएस) भी बनाई है। यह योजना स्टार्टअप की अवधारणा के प्रमाण, प्रोटोटाइप विकास, उत्पाद परीक्षण, बाजार में प्रवेश और व्यावसायीकरण के लिए स्टार्टअप को वित्तीय सहायता प्रदान करने में मदद करेगी।

भारी उद्योग

- भारी उद्योग मंत्रालय ऑटोमोबाइल, पूंजीगत सामान और भारी विद्युत उपकरण क्षेत्रों के विकास को प्रोत्साहित करता है और विनिर्माण, परामर्श और अनुबंध सेवाओं और चार स्वायत्त संगठनों में लगे 29 केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यमों (सीपीएसई) का प्रबंधन करता है।

- भारी उद्योग मंत्रालय के प्रमुख क्षेत्रों में से एक उद्देश्य घरेलू ऑटोमोबाइल उद्योग की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना और नागरिकों के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी, टिकाऊ और किफायती इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना है ताकि देश में गतिशीलता के परिदृश्य को बदला जा सके।
- इलेक्ट्रिक मोबिलिटी इकोसिस्टम में परिवर्तन से विनिर्माण के साथ-साथ सेवा क्षेत्र में युवाओं के लिए नई नौकरियां पैदा होंगी, तेल आयात पर निर्भरता कम होगी, वायु प्रदूषण कम होगा और पर्यावरण स्वच्छ होगा।

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई)

- सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय नए उद्यमों के निर्माण को प्रोत्साहित करता है और साथ ही मौजूदा उद्यमों को सहायता प्रदान करके संबंधित मंत्रालयों/ विभागों, राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के सहयोग से खादी, ग्रामीण और कॉयर उद्योग क्षेत्र के विकास को बढ़ावा देकर एक जीवंत क्षेत्र की कल्पना करता है।
- एमएसएमई न केवल बड़े उद्योगों की तुलना में कम पूंजी लागत पर बड़े रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, बल्कि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों के औद्योगीकरण में भी मदद करते हैं, जिससे क्षेत्रीय असंतुलन को कम किया जा सकता है और देश में राष्ट्रीय आय और धन का समान वितरण सुनिश्चित होता है।
- उद्यमियों की सुविधा के लिए दिशानिर्देशों के साथ, विनिर्माण और सेवा उद्यमों के लिए 2020 में एक नया वर्गीकरण अधिसूचित किया गया था। समग्र मानदंड ने विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों के बीच अंतर को हटा दिया, इसके अलावा पहले के मानदंड में टर्नओवर का एक नया मानदंड जोड़ा जो केवल संयंत्र और मशीनरी में निवेश पर आधारित था।
- एमएसएमई मंत्रालय ने अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यमों को एमएसएमई के औपचारिक दायरे में लाने के लिए जनवरी, 2023 में उद्यम असिस्ट प्लेटफॉर्म भी शुरू किया है।
- भारतीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र, छह करोड़ से अधिक उद्यमों के साथ, अर्थव्यवस्था के एक अत्यधिक जीवंत और गतिशील क्षेत्र के रूप में उभरा है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 27 प्रतिशत और भारत के निर्यात में लगभग 44 प्रतिशत और योगदान देने के साथ साथ 11.10 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार भी प्रदान करता है।
- एमएसएमई की संशोधित परिभाषा के अनुसार एमएसएमई पंजीकरण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए, एमएसएमई मंत्रालय ने जुलाई, 2020 में उद्यम पंजीकरण पोर्टल (www. udyamregistration.gov.in/) प्रारम्भ किया।

खादी और ग्रामोद्योग आयोग

- खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) की स्थापना संसद के अधिनियम के तहत की गई थी, और 1987 एवं 2006 में संशोधित, यह एमएसएमई मंत्रालय के तहत एक वैधानिक संगठन है जो ग्रामीण इलाकों में रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र को बढ़ावा देने और विकसित करने का कार्य कर रहा है ताकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत हो सके।

कपड़ा

- यह 50 मिलियन से अधिक स्पिंडल और 8,42,000 रोटर्स की स्थापित क्षमता वाला 3,400 कपड़ा मिलों वाला दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा कपड़ा मिल क्षेत्र है। 45 मिलियन से अधिक लोगों को प्रत्यक्ष तौर पर रोजगार देने के साथ ही, यह उद्योग देश में रोजगार सृजन के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है।
- मूल्य के संदर्भ में भारतीय कपड़ा उद्योग कुल उद्योग उत्पादन में 7 प्रतिशत और भारत के सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) में 2 प्रतिशत और देश की निर्यात आय में 15 प्रतिशत योगदान देता है।

इस्पात

- इस्पात मंत्रालय लौह और इस्पात उद्योग के विकास और योजनाएं तैयार करने का कार्य करता है। मंत्रालय लौह अयस्क, चूना पत्थर, डोलोमाइट मैंगनीज अयस्क, क्रोमाइट्स, फेरो-मिश्र धातु, स्पंज आयरन आदि जैसे आवश्यक धातुओं के विकास और अन्य संबंधित कार्यों के लिए भी जिम्मेदार है।

- मौजूदा समय में भारत की कच्चे इस्पात की क्षमता तेजी से बढ़कर 142 मीट्रिक टन हो गई है, जिसके बाद भारत जापान को पीछे छोड़ते हुए कच्चे इस्पात का दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बन गया है।

उर्वरक

- उर्वरक विभाग रसायन और उर्वरक मंत्रालय के दायरे में आता है। विभाग का मुख्य उद्देश्य किसानों को सस्ती कीमतों पर उर्वरकों की पर्याप्त और समय पर उपलब्धता सुनिश्चित कराना है ताकि देश में ज्यादा से ज्यादा कृषि उत्पादन हो सके।
- विभाग के मुख्य कार्यों में उर्वरक उद्योग की योजना, प्रचार और विकास, उत्पादन की योजना और निगरानी, उर्वरकों का आयात और वितरण तथा स्वदेशी और आयातित उर्वरकों के लिए सब्सिडी / रियायत के माध्यम से वित्तीय सहायता का प्रबंधन शामिल है।

रसायन और पेट्रो-रसायन

- रसायन और पेट्रो-रसायन विभाग 1989 तक उद्योग मंत्रालय के अधीन था, फिर इसे पेट्रोलियम और रसायन मंत्रालय के अधीन लाया गया। 1991 में, रसायन और पेट्रो-रसायन विभाग को रसायन और उर्वरक मंत्रालय में स्थानांतरित कर दिया गया था।
- इस विभाग को रसायन, पेट्रो रसायन और फार्मास्युटिकल उद्योग क्षेत्र की योजना, विकास और नियमों की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

औषधि विभाग (फार्मास्यूटिकल्स)

- भारतीय फार्मास्युटिकल उद्योग मात्रा के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा उद्योग है। 2022-2023 के लिए फार्मास्यूटिकल्स उद्योग का कुल वार्षिक कारोबार 3,79,450 करोड़ रुपये है।
- पिछले नौ वर्षों में, यह क्षेत्र 6.4 प्रतिशत की सीएजीआर (कुल फार्मा निर्यात के अनुसार) के साथ लगातार बढ़ रहा है।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण

- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई), देश का प्रमुख पृथ्वी विज्ञान संगठन है। यह सरकार को उद्योग और भूवैज्ञानिक क्षेत्र के लिए बुनियादी पृथ्वी विज्ञान सम्बन्धी जानकारी उपलब्ध कराता है।
- जीएसआई के वर्तमान गतिविधियों में सतह मानचित्रण; हवाई और सुदूर संवेदन सर्वेक्षण; अपतटीय सर्वेक्षण; खनिज और ऊर्जा संसाधनों की खोज; इंजीनियरिंग भूविज्ञान; भू-तकनीकी जांच; भू-पर्यावरणीय अध्ययन; जल संसाधनों का भूविज्ञान; भू-खतरा अध्ययन; अनुसंधान और विकास; प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण; और सूचना सेवाएं आदि शामिल हैं।
- सार्वजनिक भूविज्ञान में अन्य गतिविधियों के साथ-साथ प्राकृतिक संसाधन मूल्यांकन और संवर्द्धन पर अब प्रमुख जोर देने वाला क्षेत्र बन गया है। जीएसआई के दो अन्य प्रमुख कार्य भूविज्ञान ज्ञान का प्रसार और क्षमता निर्माण करना है।

भारतीय खान ब्यूरो

- मार्च 1948 में स्थापित भारतीय खान ब्यूरो (आईबीएम) कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस, परमाणु खनिजों और लघु खनिजों के अलावा अन्य खनिज संसाधनों के संरक्षण और व्यवस्थित दोहन के लिए वैधानिक और विकासात्मक जिम्मेदारियों के साथ खान मंत्रालय के अधीन एक बहु-विषयक वैज्ञानिक और तकनीकी संगठन है।
- भारतीय खान ब्यूरो 2015 में संशोधित खान और खनिज (विकास और विनियमन) अधिनियम, 1957 के प्रासंगिक प्रावधानों और खनिज संरक्षण और विकास नियम, 2017 के प्रवर्तन के तहत बनाए गए नियमों; खनिज (परमाणु और हाइड्रो कार्बन ऊर्जा खनिजों के अलावा) रियायत नियम, 2016; और अन्य नए नियम और पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 और उसके तहत बनाए गए नियम के तहत नियामक कार्य करता है।
- नेशनल एल्युमीनियम कंपनी लिमिटेड (नाल्को), हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड (एचसीएल) खनन और खनिज प्रसंस्करण के क्षेत्र में काम कर रही है. और सार्वजनिक क्षेत्र की तीसरी इकाई मिनरल एक्सप्लोरेशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एमइसीएल) खनिज अन्वेषण के क्षेत्र में काम कर रही है।

कृषि और ग्रामीण विकास: प्रमुख पहल और उपलब्धियां

परिचय

- आत्मनिर्भर भारत की राह में ग्रामीण लोगों की आजीविका सुरक्षा और वित्तीय सशक्तीकरण भारत सरकार की प्रमुख प्राथमिकताएं हैं।
- सरकार ने अपनी प्रतिबद्धता को जारी रखते हुए, इस वर्ष, गांवों में समावेशी विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्रों में बदलाव में तेजी लाने के लिए कई कार्यनीतिक कदम उठाए हैं।

कृषि और ग्रामीण विकास हेतु बजटीय प्रयास

- कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय को वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 1,25,036 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जो 2022-23 के संशोधित अनुमान से 5 प्रतिशत अधिक है।
- सतत योजनाओं के लिए आवंटन के अलावा, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के विकास और कृषि त्वरक कोष की स्थापना के लिए बजट प्रावधान किए गए थे।
- कृषि ऋण का लक्ष्य बढ़ाकर 20 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया और एक नई योजना 'प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा' योजना शुरू करने के लिए 6,000 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया।
- केंद्रीय बजट में विकेंद्रीकृत भंडारण क्षमता और बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियों की स्थापना की भी घोषणा की गई है।
- दूसरी ओर, ग्रामीण विकास मंत्रालय को वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 1,59,964 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।
- बजट में, प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण और शहरी घटकों को मिलाकर) पर परिव्यय 66 प्रतिशत बढ़ाकर 79,590 करोड़ रुपये कर दिया गया।
- बजट में बड़े उत्पादक समूहों के गठन के माध्यम से ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों के सशक्तीकरण की भी घोषणा की गई। उन्हें उत्पादन बढ़ाने के लिए कच्चा माल और सहायता प्रदान की जाएगी।

मोटा अनाज को प्रोत्साहन

- भारत सरकार के प्रस्ताव के आधार पर, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने वर्ष 2023 को 'अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष' घोषित किया था।
- मोटा अनाज के उत्पादन, प्रसंस्करण तथा विपणन को बढ़ावा देने और भारत को मोटा अनाज के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए एक मिशन शुरू किया गया था।
- भारत ने, विशेष रूप से राष्ट्रीय संदर्भ में, सम्मान व्यक्त करने के लिए मोटा अनाज का नाम बदलकर श्री अन्न कर दिया है।
- मोटा अनाज को और बढ़ावा देने तथा विस्तार के लिए 'एक जिला, एक उत्पाद' योजना के तहत देश के 19 जिलों को चुना गया है।
- 500 से अधिक स्टार्टअप और बड़ी संख्या में किसान उत्पादक संगठन अब सुपर मार्केट और मॉल में सीधी बिक्री के लिए मोटा अनाज आधारित विभिन्न पोषक खाद्य पदार्थों के प्रसंस्करण और पैकेजिंग में लगे हुए हैं।
- उसी तर्ज पर, महिला स्वयं सहायता समूह छोटे गांवों में मोटा अनाज उत्पाद तैयार कर रहे हैं और ये शहरी बाजारों में अपनी जगह बना रहे हैं।
- मोटा अनाज मिशन ने मोटा अनाज की खेती में लगे लगभग 2.5 करोड़ किसानों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- भारत ने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में श्री अन्न की अपार संभावनाओं को सामने लाने के लिए नई दिल्ली में ग्लोबल मिलेट्स कॉन्फ्रेंस (मार्च 2023) का आयोजन किया।

भारत में कृषि परिदृश्य

- खाद्य उत्पादन के मोर्चे पर, देश ने 2022-23 में क्रमशः 330 मिलियन टन और 352 मिलियन टन के अनुमानित उत्पादन के साथ खाद्यान्न और बागवानी उपज दोनों के लिए एक नया रिकॉर्ड बनाया।
- पिछले वर्ष की तुलना में खाद्यान्न उत्पादन में 4 प्रतिशत (14 मिलियन टन) से अधिक की वृद्धि हुई, बागवानी उपज के उत्पादन में एक प्रतिशत (5 मिलियन टन) से अधिक की वृद्धि देखी गई।
- विपणन सीजन 2024-25 की रबी फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी मसूर के लिए 425 रुपये प्रति क्विंटल की घोषणा की गई है। इसके बाद रेपसीड तथा सरसों (200 रुपये प्रति क्विंटल); गेहूं तथा कुसुम (रु.150/-क्विंटल); और जौ तथा चना (क्रमशः रु115 और रु.105/क्विंटल) के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य में वृद्धि की गई है।
- न्यूनतम समर्थन मूल्य की सिफारिश करने वाले कृषि लागत और मूल्य आयोग (सीएसीपी) ने सरकार को गेहूं और चावल के लिए अपनी ओपन-एंडेड खरीद नीति की गहन समीक्षा करने का सुझाव दिया है।
- देश में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम और अन्य कल्याणकारी योजनाओं के लिए आवश्यकता से अधिक गेहूं और चावल का भंडार है। इसी सन्दर्भ में सरकार ने इस वर्ष 'सहकारी क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना' की सुविधा की घोषणा की है।
- एक लाख से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समितियों और 13 करोड़ से अधिक सदस्य किसानों के दूरगामी नेटवर्क के साथ, इस योजना में भोजन की बर्बादी में पर्याप्त कमी, खाद्य सुरक्षा को मजबूत करने और किसानों की आय को बढ़ावा देने की परिकल्पना की गई है।

विकास के लिए पहलें

- बजट प्रस्ताव (2023-24) के अनुसार, सरकार ने 'पीएम प्रोग्राम फॉर रिस्टोरेशन, अवेयरनेस जेनरेशन, नॉरिशमेंट एंड एमिलियोरेशन ऑफ मदर अर्थ' (पीएम-प्रणाम) योजना को मंजूरी दे दी है।
- इस पहल का उद्देश्य धरती मां के स्वास्थ्य को बचाने के लिए उर्वरकों के टिकाऊ और संतुलित उपयोग को बढ़ावा देकर, वैकल्पिक उर्वरकों को अपनाकर, वैकल्पिक खेती को बढ़ावा देकर और संसाधन संरक्षण प्रौद्योगिकियों को लागू करके राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों द्वारा शुरू किए गए जन आंदोलन का समर्थन करना है।
- इसके अलावा, इफको (भारतीय किसान उर्वरकसहकारी लिमिटेड) द्वारा विकसित और उत्पादित दुनिया में पहले तरल नैनो-डीएपी (डाइ-अमोनियम फॉस्फेट) की शुरुआत (26 अप्रैल 2023) एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी।
- सरकार ने हाल ही में रबी सीजन के लिए पोषक तत्व आधारित फॉस्फेटिक और पोटाश उर्वरकों के लिए 22.303 करोड़ रुपये की सब्सिडी को मंजूरी दी है।
- इस वर्ष, सरकार ने कुछ विशिष्ट आईटी-आधारित पहल शुरू कीं। इनमें से पहली किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) है जिसे किसान ऋण पोर्टल कहा जाता है। इसे क्रेडिट सेवाओं तक पहुंच की सुविधा के लिए डिजाइन किया गया है।
- ऋण सुविधाओं तक निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करने के लिए, सरकार ने 1 अक्टूबर से 31 दिसंबर 2023 तक 'घर घर केसीसी अभियान' नामक एक विशेष अभियान शुरू किया।
- पोर्टल की कार्यक्षमता, डेटा व्याख्या और प्रभावी उपयोग की गहन समझ प्रदान करने के लिए एक व्यापक विंड्स (मौसम सूचना नेटवर्क डेटा सिस्टम) मैनुअल लॉन्च किया गया था।
- इस वर्ष जी-20 की प्रतिष्ठित अध्यक्षता के दौरान, भारत ने हैदराबाद (15 से 17 जून, 2023) में जी-20 देशों के कृषि मंत्रियों की बैठक आयोजित की। बैठक के दो प्रमुख परिणाम हैं- (1) खाद्य सुरक्षा और पोषण पर डेक्कन हाई प्रिंसिपल 2023 और (2) अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज और अन्य प्राचीन अनाज अनुसंधान पहल (महर्षि)।

ग्रामीण भारत के लिए समृद्धि का मार्ग

- ग्रामीण विकास मंत्रालय देश में ग्रामीण विकास के भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए 2024-30 के लिए एक मध्यम अवधि की योजना और 2024-47 के लिए एक दीर्घकालिक योजना बनाने के लिए तैयार है।
- ग्रामीण विकास मंत्रालय ने अपने प्रमुख कार्यक्रम, 'दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' (डीएवाई-एनआरएलएम) के तहत एक विशेष अभियान शुरू किया है। इस अभियान का लक्ष्य दो करोड़ 'लखपति दीदियों - एसएचजी दीदियों' को सक्षम बनाना है।
- महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाए गए उत्पादों के लिए बाजार समर्थन को मजबूत करने की दिशा में एक डिजिटल कदम के रूप में, 'दीनदयाल अंत्योदय योजना राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' ने एक अभिनव ई-सरस मोबाइल ऐप लॉन्च किया है।
- 'बैंकिंग कॉरेस्पोंडेंट या बीसी सखी' गांवों में महिलाओं के सशक्तीकरण को गति दे रही है।
- सरकार ने पंचायती राज संस्थानों को स्थानीय शासन और आर्थिक विकास के जीवंत केंद्रों के रूप में फिर से कल्पना करने पर ध्यान देने के साथ अपने 'राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान' (1.04.2023 से 31.3.2026) को नया रूप दिया है।
- इसके नौ विषयों में गरीबी मुक्त, स्वस्थ, बाल-हितैषी, जल-पर्याप्तता, स्वच्छ और हरित, आत्मनिर्भर बुनियादी ढांचा, सामाजिक रूप से सुरक्षित, सुशासित और महिला-अनुकूल गांव शामिल हैं।
- कल्याणकारी योजनाओं में, जल जीवन मिशन ने 13 करोड़ घरों में नल का पानी उपलब्ध कराने के कनेक्शन प्रदान करने का मील का पत्थर हासिल कर लिया है।
- इस वर्ष, सरकार ने तीन वर्षों (2023-24 से 2025-26) में 75 लाख एलपीजी कनेक्शन जारी करने के लिए प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के विस्तार को मंजूरी दे दी है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने अपने सभी कार्यक्षेत्रों/कार्यक्रमों के तहत 7,45,780 कि.मी. लंबी 1,77,119 सड़कें बनाने में मदद की है।

- विभिन्न आईटी तंत्रों को शामिल करने से अधिक पारदर्शिता के साथ महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण सशक्तीकरण गारंटी अधिनियम, 2005 के कार्यान्वयन में तेजी आई है।
- जल संरक्षण की दृष्टि से, मिशन अमृत सरोवर का लक्ष्य भविष्य के लिए देश के प्रत्येक जिले में 75 जल निकायों का कायाकल्प और विकास करना है।
- इस वर्ष स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम) के नौ वर्ष पूरे हो गए हैं और 75 प्रतिशत से अधिक गांवों की ओडीएफ (खुले में शौच मुक्त) से मुक्ति इस संबंध में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

निष्कर्ष

इन सभी प्रयासों का उद्देश्य ग्रामीण भारत के सशक्तीकरण, सक्रिय सामाजिक-आर्थिक समावेशन तथा एकीकरण के माध्यम से जीवन और आजीविका में बदलाव लाना है। जिससे ग्रामीण लोगों की आजीविका सुरक्षा और वित्तीय सशक्तीकरण सुनिश्चित हो सके।

2023 की झलकियाँ

जनवरी

- विश्व ने 2023 को मोटे अनाज के वर्ष के रूप में मनाया
- 17वां प्रवासी दिवस सम्मेलन 2023 इंदौर में आयोजित किया गया
- दुनिया की सबसे लंबी रिवरक्रूज एमवी गंगा विलास का उद्घाटन
- भारत विज्ञान कांग्रेस के 108वें सत्र का आयोजन नागपुर में किया गया
- 21 परमवीर चक्र पुरस्कार विजेताओं के नाम पर अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के 21 अज्ञात द्वीप का नामकरण किया गया

फरवरी

- केंद्रीय बजट 2023-24 लोकसभा में पेश हुआ
- 36वां सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला आयोजित हुआ
- भारत को अपनी संशोधित ड्रोन नीति मिली
- मेगा राष्ट्रीय जनजातीय उत्सव 'आदि महोत्सव' नई दिल्ली में आयोजित किया गया
- नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला का आयोजन हुआ

मार्च

- बर्लिन, जर्मनी में आयोजित आईटीबी 2023 में अंतरराष्ट्रीय गोल्डन सिटी गेट टूरिज्म अवार्ड 2023 में भारत ने गोल्डन और सिल्वर स्टार जीते
- उत्तर प्रदेश के विभिन्न शहरों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस 2023 समारोह के एक भाग के रूप में खेलो इंडिया, दस का दम टूर्नामेंट का आयोजन किया गया
- एशिया के सबसे बड़े 4 मीटर अंतरराष्ट्रीय लिक्विड मिरर टेलीस्कोप (आईएलएमटी) का उत्तराखण्ड के देवस्थल में अनावरण किया गया
- राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स पोर्टल (मरीन) का सागरसेतु मोबाईल ऐप जारी किया गया

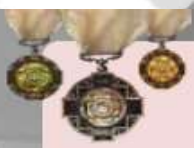

अप्रैल

- काशी तेलुगु समागम का आयोजन वाराणसी, उत्तर प्रदेश में सम्पन्न हुआ
- राजस्थान की पहली वंदेभारत एक्सप्रेस सेवा अजमेर और दिल्ली कैंट के बीच शुरू हुई
- राष्ट्रपति भवन के दूसरे अलंकरण समारोह में राष्ट्रपति ने वर्ष 2023 के 3 पद्मविभूषण, 5 पद्मभूषण और 47 पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किये
- सार्वजनिक और निजी सहयोग दिशानिर्देशों का विवरण देनेवाली भारतीय अंतरिक्ष नीति पेश की गई

मई

- पहचान की चोरी, जाली केवाईसी, बैंकिंग धोखाधड़ी जैसी घटनाओं को रोकने के लिए विकसित 'संचार साथी' पोर्टल लॉंच किया गया
- कांस फिल्म महोत्सव में भारतीय मंडप का उद्घाटन
- उत्तर प्रदेश में खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2022 का अयोजन
- प्रधानमंत्री को पापुआ न्यू गिनी के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'ग्रैंड कम्पैनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ लोगोहू' से सम्मानित किया गया

जून

- भारत के पहले अंतरराष्ट्रीय क्रूज जहाज, एमवी एम्प्रेस-चेन्नई से श्रीलंका के लिए रवाना
- नई पीढ़ी की बैलिस्टिक मिसाइल 'अग्नि प्राइम' का ओडिशा तट से सफलतापूर्वक परिक्षण किया गया
- 9वाँ अंतरराष्ट्रीय योगा दिवस मनाया गया
- वर्ष 2021 के लिए 'गांधी शांति पुरस्कार' गीता प्रेस, गोरखपुर को प्रदान किया गया

जुलाई

- चंद्रयान-3, 14 जुलाई को आंध्रप्रदेश के श्रीहरिकोटा में सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से लॉन्च किया गया
- प्रधानमंत्री को पेरिस में फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान 'ग्रैंड क्रॉस ऑफ लीजन ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया
- अंतरराष्ट्रीय पैरा तैराक सत्येन्द्र सिंह लोहिया को इंग्लिश चैनल पार कर इतिहास रचने के लिए सम्मानित किया गया

अगस्त

- 77वें स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री ने पीएम विश्वकर्मा योजना शुरू करने की घोषणा की, जिससे पारंपरिक शिल्प कौशल में कुशल व्यक्तियों को लाभ मिलेगा
- भारत ने इंडोनेशिया के सेमारंग में आयोजित 20वीं आशियान-भारत के आर्थिक मंत्रियों की बैठक में हिस्सा लिया
- चंद्रयान-3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र के सतह पर सफलता पूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग

सितम्बर

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र ने श्रीहरिकोटा रेंज से देश का पहला सौर मिशन, आदित्य एल1 प्रक्षेपित किया

इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एवं एक्सपो सेंटर 'यशोभूमि' का पहला फेज नयी दिल्ली में देश को समर्पित

नई दिल्ली के प्रतिष्ठित भारत मंडपम् में जी20 नेताओं का शिखर सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली में पहला हरित हाइड्रोजन फ्यूल सेल बस का परिचालन शुरू

अक्टूबर

9वां जी20 संसदीय अध्यक्ष शिखर सम्मेलन (पी20) भारत अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन केंद्र, यशोभूमि, द्वारका, दिल्ली में आयोजित किया गया। शिखर सम्मेलन से पहले लाइफ़ (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) पर संसदीय फोरम आयोजित किया गया था

नई दिल्ली युवाओं के लिए 'मेरा युवा भारत (एमवाई भारत) प्लेटफार्म का उद्घाटन हुआ

राष्ट्रपति ने 69वें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्रदान किए

नवम्बर

देश में भव्य पैमाने पर आयुर्वेद दिवस मनाया गया

भारत और नीदरलैंड ने चिकित्सा उत्पाद विनियमन और चिकित्सा उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने में सहयोग के इरादे के एक ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

आइटीपीओ, प्रगति मैदान में भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेला शुरू जीआई मंडप में 200 से अधिक अद्वितीय भौगोलिक संकेत (जीआई) उत्पाद प्रदर्शित किए गए

संयुक्त सैन्य अभ्यास " मित्र शक्ति अभ्यास- 2023" का 9वां संस्करण औंध (पुणे) में संपन्न हुआ

प्रधान मंत्री विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह मिशन (पीवीटीजी)

बजट आवंटन

- सरकार ने बजट 2023-24 में प्रधान मंत्री पीवीटीजी विकास मिशन के लिए 15,000 करोड़ रुपये आवंटित किए।
- आवंटन तीन साल तक चलता है और अनुसूचित जनजातियों के लिए विकास कार्य योजना का हिस्सा है।

मिशन के उद्देश्य

- मिशन का लक्ष्य सामाजिक-आर्थिक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) का उत्थान है।
- इसका उद्देश्य सुरक्षित आवास, स्वच्छ पानी, स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, सड़क और दूरसंचार कनेक्टिविटी, और टिकाऊ आजीविका जैसे आवश्यक सुविधाएं प्रदान करना है।

फ़ील्ड अवलोकन

- जनजातीय कार्य मंत्रालय के अधिकारी पीवीटीजी क्षेत्रों का क्षेत्रीय दौरा करते हैं।
- सड़क और इंटरनेट कनेक्टिविटी सहित बुनियादी ढांचे को बढ़ाने के लिए केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर।
- रिपोर्ट आजीविका के अवसरों में सुधार के साथ-साथ स्वास्थ्य और शिक्षा सुविधाओं को मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर देती है।